Topic – CONCEPT OF SANSKRITIZATION: A CRITICAL VIEW

संस्कृतीकरण की अवधारणा : एक आलोचनात्मक दृष्टिकोण

Sol– यद्यपि संस्कृतीकरण की अवधारणा ने जाति तथा में होने वाले सामाजिक - सांस्कृतिक परिवर्तनों के विश्लेषण में महत्वपूर्ण योग दिया है फिर भी इस अवधारणा में अनेक दोष है। कई विद्वानों ने इसकी कटु आलोचना की है। हम यहां संस्कृतीकरण की अवधारणा की कुछ कमियों पर विचार करेंगे।

(1) विषम एवं जटिल अवधारणा – श्री० श्रीनिवास स्वयं स्वीकार करते है कि संस्कृतीकरण एक विषम एवं जटिल अवधारणा है यह भी सम्भव है कि इसे एक अवधारणा मानने की अपेक्षा अनेक अवधारणाओं का गुच्छा (Bunch of concepts) मानना अधिक लाभदायक है। यहां याद रखने योग्य बात यह है कि व्यापक सामाजिक और सांस्कृतिक प्रक्रिया के लिए यह केवल एक नाम है और हमारा प्रमुख कार्य इन प्रक्रियाओं की प्रकृति को समझना है। जैसे ही यह पता चले कि संस्कृतीकरण शब्द विश्लेषण में सहायता पहुँचाने की अपेक्षा बाधक है, उसे तुरन्त छोड़ देना चाहिए।

(2) स्पष्टता, सुनिश्चितता व तर्कसंगतता का अभाव – संस्कृतीकरण की अवधारणा में स्पष्टता, सुनिश्चितता व तर्कसंगतता का अभाव पाया जाता है। इसलिए यह तथ्यों के विश्लेषण व सिद्धांत निर्माण में उपयोगी नहीं की जा सकती। श्रीनिवास ने लिखा है "इसमें कोई सन्देह नहीं कि सांस्कृतिक संस्कृतीकरण की उपयोगिता एक अवधारणा के बेढंगा व अस्पष्ट होने के बावजूद भी वे इसका प्रयोग करते रहेंगे और यह भी बिना पश्चात्ताप के।"

(3) परस्पर विरोधी बातें – कुछ स्थानों पर श्रीनिवास ने संस्कृतीकरण की अवधारणा के सम्बंध में परस्पर विरोधी बातें बतलायी है। एक स्थान स्थान पर आपने लिखा है, "किसी के आर्थिक उन्नयन के बिना भी संस्कृतीकरण हो सकता है तथा

Ajanta PRODUCTS Officer

तथा एक अन्य स्थान पर लिखते हैं कि, "आर्थिक उन्नयन राजनीतिक शक्ति के संचयन, शिक्षा, नेतृत्व तथा संस्तरण की प्रणाली में ऊपर उठने की अभिलाषा, आदि संस्कृतीकरण के लिए उपर्युक्त कारण हैं।" संस्कृतीकरण के परिणामस्वरूप स्वयं ही किसी समूह को उच्च स्थिति प्राप्त नहीं हो जाती जातियों के निरंतर संस्कृतीकरण का सम्भवतः यह परिणाम निकले कि कालान्तर में पूरे हिन्दू समाज में सांस्कृतिक एवं संरचनात्मक परिवर्तन हो जाए।" वे अन्यत्र लिखते हैं "किसी अछूत समूह का चाहे कितना ही संस्कृतीकरण क्यों न हो जाए, वह अस्पृश्यता की बाधा को पार करने में असमर्थ रहेगा।" उपर्युक्त कथनों से स्पष्ट है कि संस्कृतीकरण की अवधारणा में अनेक असंगतियाँ रह गयी हैं।

(4) श्रीनिवास मानते हैं कि संस्कृतीकरण की प्रक्रिया द्वारा लम्बवत सामाजिक गतिशीलता (vertical social mobility) सम्भव है। इस प्रक्रिया के द्वारा जातीय संस्तरण में अपनी स्थिति को ऊँचा उठाने में समर्थ हो जाती हैं। परन्तु यह संदेह-जनक है कि क्या वास्तव में ऐसा होता है। इस सम्बन्ध में डॉ. डी. एन. मजूमदार ने लिखा है कि सैद्धान्तिक और केवल "सैद्धान्तिक रूप में ही ऐसी स्थिति की कल्पना की जा सकती है जब हम विशिष्ट मामलों पर ध्यान देते हैं तो जाति गतिशीलता सम्बंधी हमारा ध्यान और अनुभव ऐसी सैद्धान्तिक मान्यता की दृष्टि से सही नहीं उतरता। जाटव अपनी मूल सामाजिक स्थिति से अवश्य कुछ आगे बढ़ पाए हैं — चाहे वे सम्प्रदाय के रूप में संगठित हो पाये हों, चाहे उन्होंने शराब पीना, विधवा विवाह, विवाह विच्छेद, यहाँ तक कि मांस खाना भी बन्द क्यों न कर दिया हो, लेकिन क्या सामाजिक संस्तरण है, क्या जाटव तथा हरिजन उच्च जातियों के सदृश्य हो गए हो? चमारों का फैलाव Horizontal प्रकार का है और यही बात अन्य जातियों के सन्दर्भ में सही है। निम्न जातियाँ जाति गतिशीलता को एक क्षैतिज गति के रूप में देखती हैं, जबकि ब्राह्मणों और अन्य जातियों ने ऐसी गतिशीलता को ऊपर चढ़ने के रूप में माना है। जाति गतिशीलता के सम्बंध में जो कुछ तत्व प्राप्त हो रहे हैं वे लम्बवत गतिशीलता को नहीं वरन् क्षैतिज गतिशीलता को व्यक्त करते हैं।"
डॉ. मजूमदार के उपर्युक्त तथ्यपूर्ण विचारों से स्पष्ट है कि संस्कृतीकरण की प्रक्रिया के माध्यम से कोई निम्न जाति लम्बवत्

स्थान से ऊपर नहीं उठ पाती. उच्च जातियों के सदृश नहीं बन जाती, वरन् अपने ही समान स्तर की अन्य जातियों में अथवा अपनी ही जाति की विभिन्न शाखाओं में कुछ ऊपर उठ जाती है।

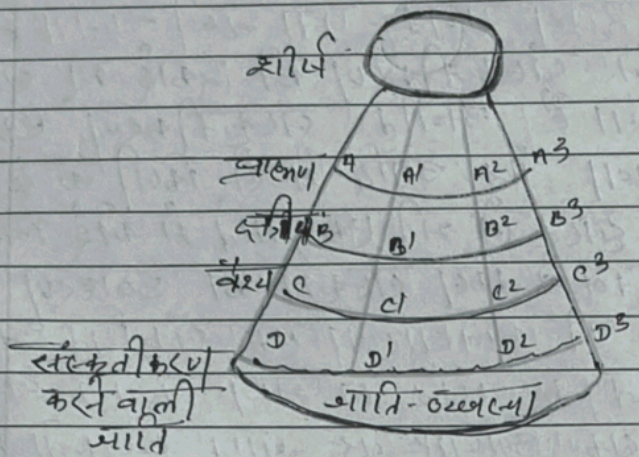

उपर्युक्त चित्र से स्पष्ट है कि संस्कृतीकरण करने वाली जाति 'D' का संस्कृतीकरण करने से पद परिवर्तित हो जाता है। वह D1, D2, D3 पर पहुँचती है जो कि क्षैतिज परिवर्तन है, किन्तु वह जाति संस्तरण में ऊपर नहीं चढ़ती है उसकी दूरी ब्राह्मण, क्षत्रिय एवं वैश्य जातियों से उतनी ही बनी रहती है। दूसरे शब्दों में उसकी सामाजिक दूरी परिवर्तित नहीं होती और वह कभी भी C, B या A श्रेणी की जाति नहीं बन सकती।

(5) डॉ. योगेन्द्र सिंह संस्कृतीकरण को सांस्कृतिक और सामाजिक गतिशीलता की एक प्रक्रिया मानते हैं उन्होंने लिखा है कि "संस्कृतीकरण सापेक्ष रूप से बन्द हिन्दू सामाजिक व्यवस्था है, सांस्कृतिक और सामाजिक गतिशीलता की एक प्रक्रिया है यह सामाजिक परिवर्तन का एक अन्तर्जात स्रोत है। एक सामाजिक मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोण से संस्कृतीकरण भविष्य में अपनी स्थिति सुधार लाने की आशा में उच्च समूह की संस्कृति की ओर अग्रिम समाजीकरण के लिए सार्वभौमिक प्रेरणा का एक सांस्कृतिक विशिष्ट मामला है।"

(6) संस्कृतीकरण एक अग्रिम समाजीकरण की प्रक्रिया भी है किन्तु इस प्रकार का समाजीकरण व्यक्ति के लिए अपकार्यात्मक होगा क्योंकि वह जिस समूह में वह उसका सदस्य बनने की आकांक्षा रखता है, गतिशीलता के अभाव एक ऐसी प्रक्रिया नहीं है जिसके द्वारा हिन्दू समाज में संरचनात्मक परिवर्तन संभव हो सके।

(7) डॉ. योगेन्द्र सिंह के अनुसार संस्कृतीकरण की प्रक्रिया भारत में भूतकाल में सत्ता के उत्थान और पतन द्वारा, संघर्षों और युद्ध द्वारा राजनीतिक दांव-पेच द्वारा प्रभुत्व-सम्पन्न समूहों के पद प्राप्ति को व्यक्त करती है। ऐतिहासिक उदाहरण संरचनात्मक परिवर्तनों के उदाहरण हैं जिनका संस्कृतीकरण जैसी अवधारणा के द्वारा पूर्णतः पता नहीं चलता है।

(8) श्रीनिवास ने संस्कृतीकरण की इकाई का स्पष्टता से उल्लेख नहीं किया है अर्थात संस्कृतीकरण एक वर्ण, जाति, उपजाति अथवा गोत्र, आदि में से किसी के द्वारा की जाती है, सांस्कृतिक दृष्टि से भी एक जाति में कोई भिन्न समूह पाये जाते हैं, तब वे किस संस्कृति का उदाहरण है।

(9) संस्कृतीकरण की अवधारणा एक संकुचित अवधारणा है जिसका जन्म भारत के छोटे से भाग कुर्ग के अध्ययन के दौरान हुआ। इसके आधार पर जाति-व्यवस्था में होने वाले केवल पदमूलक परिवर्तन को समझा जा सकता है। यह अवधारणा भारतीय समाज में घटित होने वाले अन्य परिवर्तनों को व्यक्त नहीं करती।

(10) कुछ समाजशास्त्रियों का मत है कि संस्कृतीकरण पर-संस्कृतीकरण का ही एक विशिष्ट रूप है। अतः एक जाति के द्वारा दूसरी जाति की संस्कृति को अपनाने के लिए नया नाम गढ़ने की कोई आवश्यकता नहीं है। पर-संस्कृतीकरण ही इसके लिए उपयुक्त शब्द है।

(11) डॉ. मजूमदार कहते हैं कि श्रीनिवास ने यह भी स्पष्ट नहीं किया है कि संस्कृतीकरण की प्रक्रिया द्वारा हम किन बातों को प्रकट करना चाहते हैं तथा इस प्रक्रिया का विकास कहां तक होगा और वह कहां जाकर रुकेगी और क्यों?

उपरोक्त विश्लेषण के आधार पर हम कह सकते हैं कि सांस्कृतिक परिवर्तन की प्रक्रिया का वर्णन करने के लिए यह बहुत उपयुक्त अवधारणा नहीं है।

समाप्त